विचार बिन्दु

परिश्रम करने से ही कार्य सिद्ध होते है, केवल इच्छा करने से नहीं। –हितोपदेश

डंडारोपण उष्णकटिबंधीय वनों के पुनर्स्थापन की प्रभावी रणनीति है

वृक्षारोपण के माध्यम से उष्णकटिबंधीय वनों की बहाली एक बहु-प्रचलित विधि है परन्तु महंगी है क्योंकि रोपण क्षेत्र में कम से कम 2-3 साल के लिये खर-पतवार का प्रबंध आवश्यक रहता है। एक वैकल्पिक विधि वृक्षों की बड़ी शाखाओं को काटकर रोपण करना है जो कुछ परिस्थितियों में रोपित पौधों से भी बेहतर परिणाम दे सकता है। उदाहरण के लिये एक वर्ष के बाद रोपित पौधों की तुलना में डंडारोपण से उगे पौधों में जमीन के नीचे व ऊपर बायोमास उत्पादन में काफी अधिक वृद्धि देखी जाती है। डंडारोपण (वेजीटेटिव कटिंग, स्टेक प्लांटिंग, जायंट स्टेक्स) उष्णकटिबंधीय वनोंकी बहाली के लिये एक सरल, कम लागत वाला प्रभावी तरीका है किन्तु इसका उपयोग प्राय: कम किया जाता है।यह तकनीक पारंपरिक वृक्षारोपण के तरीकों से जुड़ी बाधाओं को दूर कर वन पुनर्स्थापन के प्रारंभिक परिणामों में सुधार कर सकती है। इस विधि से कुछ प्रजातियों के वृक्षों की बड़ी शाखायें रोपित करने पर शीघ्रता से फुटान होकर नये पौधे स्थापित हो सकते हैं, इसलिये खर-पतवार नियंत्रण की आवश्यकता बहुत कम रह जाती है।

डंडारोपण अनेक कारणों से महत्वपूर्ण है (देखें, एम. दिआज़-पायेज़ इत्यादि, रेस्टोरेशन इकोलॉजी, ई13611, 24 नवम्बर 2021; आर.ए. जहावी, के.डी, हॉल, रेस्टोरेशन इकोलॉजी, 17(6): 854 - 864 2009)। पहली बात यह है की बिजौलों के पूर्ववर्ती चरणों जैसे बीज-संग्रह, सीडलिंग्स को पौधशाला में उगाना, और रखरखाव आदि से बच सकते हैं। दूसरा, चूंकि शुरुआत में रोपण के समय जीवित डंडे की ऊंचाई लगभग 2 मीटर रहती है इसलिये पुनर्स्थापन क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा को कम करने के लिये खर-पतवार साफ करने की आवश्यकता नहीं रहती है। रोपित किए गये डंडों से बड़े पौधे शीघ्र विकसित हो सकते हैं, जिससे मवेशी चर नहीं पाते।तीसरी बात यह है कि बड़ी कटिंग्स में जड़ें और फुटान होने से शाखायें और छत्र तेजी से विकसित होते हैं जिससे मिट्टी से पोषक तत्व शीघ्रतापूर्वक प्राप्त करने में मदद मिलती है। डंडों से विकसित पौधों में उच्च विकास दर और शीघ्र प्रजनन होता है, जो आवास संरचना को बेहतर करता है और बीज विकीर्णन करने वाले प्राणियों को को अधिक तेज़ी से आकर्षित करता है। बड़ी कटिंग्स प्राय: रोपण के बाद शीघ्रता से फल देने लगती हैं इस कारण पक्षियों और चमगादड़ों को आकर्षित कर सकते हैं जो बीज विकीर्णन में मदद करते हैं। इस प्रकार पौधशाला में पौधे उगाने, परिवहन करने, रोपण करने, साइट का रखरखाव आदि पर आने वाला खर्च कम हो जाता है तथा लागत में 10 गुना तक की कमी की जा सकती है।इस सब बचत के साथ ही तेजी से वृद्धि होने के कारण वन पुनर्स्थापन के परिणाम बेहतर होते हैं।

भारत में बड़ी कटिंग्स पर अध्ययन तो कम प्रकाशित हुए हैं परन्तु अनुभवजन्य ज्ञान बहुत है। वर्ष 1972 में भारतीय वन सेवा के अधिकारी एम.ए. वहीद खान ने सूडान में विकसित की गई बोसवेलिया पेपायरीफेरा को 90-120 सेमी लम्बी और 21-25 सेमी गोलाई की कटिंग्ससे उगाने की तकनीक का वर्णन प्रकाशित किया था। इसके आधार पर यह सुझाव दिया गया था कि यह तकनीक भारत में शल्लकी (बोसवेलिया सेराटा), जिसके वनों के पुनर्स्थापन के सभी प्रयास विफल रहे हैं, के वृक्षारोपण के लिये भी उपयुक्त होनी चाहिये (देखें, एम.ए. वहीद खान, इंडियन फ़ॉरैस्टर, 98(7): 437-440, 1972)। लेकिन असलियत यह है कि राजस्थान में शल्लकी की बड़ी कटिंग्स का रोपण वर्ष 1960 के दशक से ही होता आया है। भारत में एक और अध्ययन आंध्र प्रदेश के पूर्वी गोदावरी के मारेदुमिली क्षेत्र से संबंधित है। अप्रैल 1992 में कुल्लू (स्टरक्यूलिया यूरेन्स) के 30 साल पुराने पेड़ों से 25-38 सेमी की परिधि के लगभग 5 फीट लंबे डंडे एकत्र कर रोपित किये गये थे। इन 13 डंडों में से 11 में सफलता पूर्वक जड़ें और फुटान पाया गया। तने से फुटान 15 दिनों के बाद हुआ और 1.5 महीने के बाद अधिकतम था। रूटिंग 2 महीने के बाद हुई थी। अगस्त 1992 में जड़ वाले पौधों को फील्ड में स्थानांतरित कर दिया गया था (देखें, के.के. रेड्डी, के. वेंकइया, इंडियन जर्नल ऑफ़ फॉरैस्ट्री, 7(1):66-68, 1994)। जीवित बाड़ लगाने की परंपरा तो पूरे भारत में बहुत पुरानी है (देखें, डी.एन. पाण्डेय, एथनोफॉरैस्ट्री, प्रशासनिका, 23(2): 29-47, 1996)।

दक्षिणी कोस्टा रिका में बरगद कुल की आठ की-स्टोन प्रजातियों पर परीक्षण में डंडों से पुनरुत्पादन की उत्तरजीविता 100 प्रतिशत तक पायी गयी, हालांकि कुछ प्रजातियों में यह अत्यंत कम थी। बचे हुये पौधों का अध्ययन बताता है कि यह पद्धति कम समय में फलों की उपलब्धता में वृद्धि करती है, और इस तरह रेस्टोरेशन के लिये बहुत मददगार है (देखें, आर.ए. जहावी, जे.एल. रीड, पर्सपेक्टिव्स इन इकोलॉजी एंड कंसर्वेशन, 16(3): 133-138, 2018)।

बड़े तने और जड़ की कटिंग का उपयोग करके पेड़ उगाना एक सामान्य तकनीक है, जिसका उपयोग दुनिया भर में वांछित जीनोटाइप को बनाये रखते हुये शीघ्र फल उत्पादन हेतु लोग करते आये हैं। इस तकनीक का उपयोग जीवित-बाड़ को शीघ्रतापूर्वक स्थापित करने के लिये भी किया जाता रहा है।

जब पौधशालाओं में पौधे उगाकर वृक्षारोपण क्षेत्र में रोपित किये जाते हैं तो महंगे पड़ते हैं। एक अत्यंत महत्वपूर्ण अध्ययन में 10 प्रजातियों के पौधे रोपित किये गये और उन्ही 10 प्रजातियों की 2 मीटर लंबी वेजिटेटिव कटिंग लगाई गईं। यह अध्ययन 3 वर्ष तक किया गया। दोनों ही प्रकार के रोपण में तने और जड़ों का जैव भार नापा गया। इसमें बड़ी कटिंग्स की उत्तरजीविता 40 से 90 प्रतिशत तक पाई गई। इनमें से 4 प्रजातियों में 3 साल के भीतर फल भी आने लगे। रोचक बात यह थी कि नर्सरी में उगा कर लगाये गये पौधों की तुलना में डंडारोपण से विकसित हुये पौधों का जैवभार 7 से 50 गुना तक अधिक पाया गया। सीडलिंग्स में जहाँ 2 से 15 ग्राम जैव भार पाया गया वहीं डंडारोपण में 65 से 125 ग्राम तक जैवभार मिला। इसके अलावा डंडों से जो जड़ें विकसित हुईं वे 6 मीटर तक पायी गईं, जबकि नर्सरी में उगा कर रोपित किए गये पौधों में जड़ों का विकास इससे कई गुना कम था। इन सब में आये खर्चे का भी तुलनात्मक अध्ययन किया गया और यह पाया गया कि नर्सरी में उगाकर पौधे लगाने का खर्चा डंडों के रोपण से 2 से 10 गुना तक ज्यादा था। हालांकि डंडों का परिवहन भी आसान नहीं है लेकिन वृक्षारोपण की अन्य विधियों के साथ इस विधि को एकीकृत करते हुये उष्णकटिबंधीय शुष्क वनों को अच्छी तरह पुनर्स्थापित किया जा सकता है (देखें, आर.ए. जहावी, के.डी, हॉल, रेस्टोरेशन इकोलॉजी, 17(6): 854 - 864 2009)।

बड़े तने और जड़ की कटिंग का उपयोग करके पेड़ उगाना एक सामान्य तकनीक है, जिसका उपयोग दुनिया भर में वांछित जीनोटाइप को बनाये रखते हुये शीघ्र फल उत्पादन हेतु लोग करते आये हैं। इस तकनीक का उपयोग जीवित-बाड़ को शीघ्रतापूर्वक स्थापित करने के लिये भी किया जाता रहा है। नर्सरी में उगाकर रोपित किये जाने पौधों की तुलना में बड़े डंडों के रोपण के वन बहाली हेतु स्पष्ट पारिस्थितिकीय लाभ हैं किन्तु बड़े कटिंग के उपयोग की ज्यादातर उपेक्षा की गई है।अत: इस तकनीक का प्रयोग करने हेतु कुछ स्पष्ट सुझाव हैं जिनका उपयोग कर हम बड़े पौधे विकसित कर सकते हैं(देखें, डी.एन. पाण्डेय, इंस्टेंट ट्रीज: स्टेक प्लांटिंग इन ए नटशेल, 2017)।

पहली बात यह है कि उष्णकटिबंधीय शुष्क वनों में पेड़ों की प्रजातियों में फुटान की प्रचुर क्षमता होती है इसलिए आग, कटान या चराई जैसी गड़बड़ी के बाद उच्च पुनरुत्पादन क्षमता होती है। परन्तु ध्यान यह रखना है कि ऐसा जरूरी नहीं है कि जो प्रजातियाँ कॉपिस या पुन:प्रस्फुटन से उग जाती हैं वे सभी बड़ी कटिंग्स से भी उग जायें (डी.एल.एम. विएरा इत्यादि, रेस्टोरेशन इकोलॉजी, 21(3): 305-311, 2013), अत: बड़े डंडों की कटिंग्स से आने वाली प्रजातियों का ही डंडारोपण करना चाहिये।

दूसरी बात यह है कि राजस्थान में अनुभवजन्य ज्ञान देखा जाये तो कुछ प्रजातियों के बड़े वृक्ष, और विशेष रूप से बड़े बरगद के वृक्ष, वनों के पुनर्स्थापन में प्रभावी भूमिका निभाते हैं, इसलिये रोपण क्षेत्रों के आसपास इनके संरक्षण को प्राथमिकता दिया जाना चाहिये। परन्तु जहाँ इन प्रजातियों के वृक्ष नहीं हैं वहां डंडारोपण द्वारा शल्लकी (सालर), वनखड़ा, सेमल, पीपल, बरगद, पीपली (फाइकस एम्प्लीसीमा), गधा-पलाश, गूलर, गुग्गुलु, संदेशड़ा, सहजन आदि की 30 से 50 बड़ी वेजीटेटिव कटिंग्स प्रति हेक्टेयर, जिनमें कम से कम 4 बरगद कुल की कटिंग्स भी हों, लगाना उपयोगी रहता है। इस प्रकार से रोपित हरे डंडे प्रारंभ में बीज विकीर्णन करने वाले पक्षियों को उड़कर बैठने का स्थान देते हैं, और अपनी लम्बाई के कारण खर-पतवार को मात देते हुये वृक्ष का रूप लेकर क्षेत्र के पुनरुत्पादन में बेहतरी लाते हैं।

तीसरी बात यह है कि वृक्षों से कटिंग प्राप्त करते समय यह ध्यान रखना चाहिये किसी भी प्रजाति के केवल एक ही वृक्ष या केवल एक ही क्षेत्र के वृक्षों से कटिंग्स प्राप्त करने के बजाय उस प्रजाति के विभिन्न क्षेत्रों में उग रहे वृक्षों से कटिंग्स लाना और लगाना उचित रहता है ताकि जेनेटिक स्तर पर जैव-विविधता को एक साथ उगाया जा सके। कटिंग द्वारा पौधे उगाने पर अगर केवल कुछ पेड़ों से बहुत सी कटिंग ली जाती हैं तो यह अवांछित आनुवंशिक समरूपता का कारण बनता है। यह चिंता का कारण है क्योंकि पारिस्थितिक पुनर्स्थापन में आनुवंशिक विविधता बढ़ाना महत्वपूर्ण लक्ष्यों में से एक है। उदाहरण के लिये यदि सालर और बरगद राजस्थान के विभिन्न जिलों में प्राकृतिक रूप से पाये जाते हैं तो अधिक से अधिक क्षेत्रों से कटिंग्स प्राप्त कर वृक्षारोपण क्षेत्र में उगाना चाहिये।

चौथी बात यह है कि डंडारोपण के समय जमीन पर उल्टा नहीं गाड़ें, बल्कि डंडे का निचला हिस्सा ही जमीन पर लगभग 10 इंच गहरे गाड़ना चाहिये। अनुभव और शोध दोनों से यह ज्ञात होता है कि डंडे का हिस्सा जमीन में गाड़ने के पहले निचले हिस्से में एकाध चीरा मारकर थोर का तुरंत निकाला हुआ लेटेक्स या दूध लगा देने से जड़ों का फुटान शीघ्रता से होता है (देखें,ए. नेगुस्सी इत्यादि, न्यू फॉरैस्ट्स, 37(1):35-42, 2009)। यदि संभव हो तो ऑक्सिन से उपचार किया जा सकता है।

पांचवीं बात यह है कि कटिंग्स की सफल स्थापना को कई कारक प्रभावित करते हैं: जैसे कि प्रजातियां, काटने की उम्र, आकार और लिग्निफिकेशन, संग्रह और रोपण का मौसम, ऑक्सिन और पानी की उपलब्धता। एक ओर पर्णपाती मौसम के दौरान उच्च स्टार्च भंडारण के कारण शुष्क मौसम में कटिंग लेना उपयोगी है, क्योंकि इनमें पहली बारिश के बाद अंकुरित होने के लिये निष्क्रिय कलियां उपलब्ध रहती हैं। लेकिन दूसरी ओर शुष्क मौसम के दौरान कटिंग के प्रस्फुटन को बढ़ावा देने के लिये मिट्टी में पानी उपलब्ध नहीं होता है। अगर कटिंग लेने के लिये वर्षा ऋतु की शुरुआत तक इंतज़ार करें, जो पानी की उपलब्धता के कारण पौधे लगाने का यह सबसे अच्छा समय है, तो शाखाओं में नई पत्तियों का फुटान हो जाने से के लिये स्टार्च सामग्री का रोपण के पहले ही उपयोग किया जा चुकता है। अत: गर्मी के अंत में, वर्षा प्रारंभ होने के ठीक पहले, किन्तु शाखाओं में नई कलियों का फुटान होने के पहले ही मातृ-वृक्षों से कटिंग्स लेना चाहिये और तुरंत रोपण करना चाहिये। कटिंग्स की लम्बाई 2 से 2.5 मीटर और गोलाई 20 से 25 सेंटीमीटर या लगभग कलाई के बराबर होना चाहिये। रोपण के पूर्व शीर्ष में कटे भाग को मोम या गोबर और चिकनी मिट्टी के मिश्रण का लेप लगाने से कटिंग्स ऊपर से सूखने से बच जाती है।

अंत में, डंडारोपण उष्णकटिबंधीय वनों के पुनर्स्थापन की प्रभावी रणनीति हैलेकिन कोई जादू नहीं है कि सारी समस्याओं का हल निकाल देगा (देखें, डी. डौटरलुंगने इत्यादि, रेस्टोरेशन इकोलॉजी, 23(6): 861-871, 2015)। स्थानीय वृक्ष प्रजातियों की विविधता व इकोसिस्टम-फंक्शन में महत्वपूर्ण भूमिका वाली प्रजातियों के पुनर्स्थापन के साथ स्थानीय लोगों की जरूरत और कार्बन सीक्वेस्ट्रेशन को ध्यान रखते हुये वृक्षारोपण, सीधी बुवाई, डंडारोपण, वर्षा-जल संचय, मृदा-संरक्षण, प्राकृतिक पुनरुत्पादन को बढ़ावा और चराई, कटाई व आग से सुरक्षा जैसे समन्वित प्रयास आवश्यक हैं।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फारेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

भील राजा बांसिया ने की थी बांसवाड़ा राज्य की स्थापना

पन्नालाल मेघवाल

राजस्थान में अरावली के पहाड़ों पर लगभग चार हजार वर्ष ईसा पूर्व से जनजातियों का कब्जा था। प्रदेश में कोटा, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, मनोहरथाना, कुशलगढ़, भीनमाल, उदयपुर, प्रतापगढ़, भोमट, सलूंबर और जगरगढ़ क्षेत्र अरावली के पहाडों से घिरा हुआ था।

प्रारंभ में अरावली के पहाड़ों से घिरे इन राज्यों में लंबे समय तक भील राजाओं का शासन रहा था। राणा पूंजा भील ने मेवाड़ में भील जनजाति को एकजुट कर भीलों की मजबूत सेना का निर्माण किया। राणा पूंजा भील की इसी सेना के सहयोग से महाराणा प्रताप ने मुगलों का सामना किया था।

इतिहासकारों के अनुसार कोटा राज्य की स्थापना कोटिया भील ने की थी। कोटा राज्य भील जाति का प्रमुख केंद्र था, यहां पर कई वर्षों तक भील जातियों का शासन रहा। कोटा के पास स्थित अकेलगढ़ का पुराना किला तथा आसलपुर की ध्वस्त नगरी पर भीलों का शासन था। यहां के भील सरदारों कोकोटियाउपनाम से जाना जाता था। बूंदी के शासकसमरसिंह के पुत्र जैत्रसिंह ने 1274 ईस्वी में कोटिया भील को मारकर कोटा राज्य पर कब्जा किया और हाडा वंश राज्य की स्थापना की।

भील राजा बिया (बापड़ा) चरपोटा ने चित्तौड़गढ़, मल्हारगढ़ एवं धारगढ़ राजधानियों पर राज किया। उनके दो पुत्र अमरा एवं वागा चरपोटा थे। भील राजा बिया के पुत्र भील राजा अमरा ने अमरथुन बसाया। दूसरे पुत्र भील राजा वागा ने वाड़गुन बसाया। भील राजा अमरा ने अमरथुन को अपनी राजधानी बनाया। वे यहां से पूरे क्षेत्र में राज किया करते थे।

भील राजा अमरा के दो पुत्र बांसिया एवं बदिया थे। भील राजा अमरा के बाद भील राजा बांसिया यहां के शासक बने। राजा बांसिया व उसके भाई बहन ने अमरचंद नगर से निकलकर एक घने जंगल को काटकर नगर बसाया, जिसका नाम भील राजा बांसिया के नाम से बांसवाड़ा किया गया। भील राजा बांसिया ने बांसवाड़ा राज्य की स्थापना की थी। उन्होंने बांसवाड़ा की स्थापना 14 जनवरी 1515 ईस्वी को मकर संक्रांति के दिन की थी। इस दिन खुशी से तिल-पपड़ी का प्रसाद बनाकर पूरे नगर में बांटे जाते है। यह परंपरा बांसवाड़ा में आज भी चल रही है।

बांसिया भील की दो पत्नियां संवाई एवं हंगवाई थी। संवाई के नाम से संवाईपुरा नगर बसाया गया जबकि हंगवाई के नाम से अमरथुन में हंगनगर पहाड़ का नामकरण किया गया। बांसिया भील के तीन बहनों के नाम से तालाबों का नामकरण किया गया। बांसिया भील ने बांसवाड़ा में समाईपुरा और अमरथुन में हुरनगर पहाड़ पर किले का निर्माण कराया था, जिसके अवशेष आज भी मौजूद है। डूंगरपुर राज्य के उदयसिंह के द्वितीय पुत्र जगमालने इस राज्य को जीतकर अपना अधिकार किया था।

डूंगरपुर राज्य की स्थापना डूंगरिया भील ने की थी। डूंगरिया भील साहसी, बहादुर एवं वीर योद्धा था। उसकी वीरता एवं बहादुरी से अन्य राज्य भयभीत रहते थे। श्यामलदास के वीर विनोद के अनुसार चित्तौड के राजारतन सिंह के पुत्र कुंवर महाप ने 1197 ईस्वी में डूंगरिया भील को मारकर डूंगरपुर पर अधिकार किया था।

डूंगरपुर के पहले शासक कुंवर महाप और उनके वंशज थे। कुंवर महाप ने गलियाकोट में राजधानी स्थापित की। गलियाकोट में आज भी उनका खंडहर महल है। 12 वीं शताब्दी के अंत में मेवाड़ शासक के सबसे बड़े पुत्र सामंतसिंह को अपने छोटे भाई कुमारसिंह के साथ मेवाड़ छोड़ना पड़ा। सामंतसिंह बागोर के पहाड़ी क्षेत्र में चले गए। सामंतसिंह के उत्तराधिकारियों ने बागोर के पूरे प्रांत को नियंत्रित कर लिया।

1527 ईस्वी में खानवा के युद्ध में बागोर के रावल उदयसिंह बाबर के खिलाफ मेवाड़ के लिए लड़ रहे थे। उसके बाद उनके दोनों पुत्रों के बीच उसका क्षेत्र बँट गया और दो अलग-अलग राज्यों का गठन हुआ। पृथ्वीराज डूंगरपुर में रहे जबकि उनके भाई जगमालसिंह बांसवाड़ा के स्वतंत्र शासक बने।

बांसवाड़ा एवं डूंगरपुर जिले में माही एवं सोम नदियां बहती है। बांसवाड़ा एवं डूंगरपुर जिला वागड क्षेत्र कहलाता है। वागड़ प्रदेश की बहुसंख्यक आबादी भील समुदाय की है। भील समुदाय में प्रेम, सद्भाव एवं भाईचारा अधिक है। ये लोग आपस में एक दूसरे की मदद करने के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। ये तीज त्यौहार, शादी-ब्याह, जन्म एवं मृत्यु के सामाजिक कार्य सहभागिता से करते हैं। भील समुदाय में स्त्री एवं पुरुष समान हैं। अप्रैल महीने में भगोरिया त्यौहार होता है। इसमें लड़के-लडकियां मेले में आते है। इस मेले में वे अपना पसंदीदा जीवनसाथी चुनकर परिणय सूत्र में बंधते हैं।

भील राजा बांसिया

–पन्नालाल मेघवाल,
वरिष्ठ लेखक एवं स्वतंत्र पत्रकार।

सिरोही सरपंच की अनूठी मिसाल, बिना दहेज बेटे की शादी की

पाटन, (निसं)। निकटवर्ती ग्राम आगवाडी में एक ससुर ने दहेज परंपरा को समाप्त करते हुए अपने जमाई सिरोही सरपंच जेपी कस्वा की प्रेरणा और सलाह पर अपने बेटे की शादी में दहेज न लेकर बल्कि अपनी नई नवेली बहू को 14 लाख कीमत की कार भेंट करके एक अनूठी मिसाल पेश की।

वर पक्ष के लोगों ने बहू के परिवार से कोई दहेज नहीं लिया बल्कि बहू को बेटी मान कर बहू को कुछ गिफ्ट करेंगे व ख्याल रखेंगे।

जानकारी अनुसार नीमकाथाना उपंखड के गांव आगवाडी निवासी अर्जुनलाल चंदेलिया भारतीय सेना में ओनररी कप्तान रहे हैं। अर्जुन चंदेलिया के छोटे पुत्र विकास जो भारतीय सेना में है । छोटे पुत्र विकास की शादी नीमकाथाना उपखंड के गांव कैरवाली के ओम प्रकाश बुडानिया की बेटी निरमा के साथ हुई है जो एक किसान है। दुल्हन निरमा तृतीय श्रेणी शिक्षक हैं । विकास जम्मू कश्मीर में सेवा दे रहा है वहीं दुल्हन निरमा नीमकाथाना उपखंड के नयाबास गांव में तृतीय श्रेणी अध्यापक है। अर्जुन चंदेलिया ने अपने बेटे की नई नवेली बहू निरमा को मुंह दिखाई में लाखों की कार गिफ्ट में दे दी। इस अवसर पर सिरोही सरपंच जयप्रकाश कस्वा, जन हितैषी संस्था सिरोही अनिल फौजी, भोमाराम चंदेलिया, बुलकेश, विक्रम कस्वा, डॉ योगेश, अनिल सहित परिवार जन व अनेक लोग उपस्थित रहे।

वर पक्ष ने वधू को कार भी गिफ्ट की।

वैवाहिक रस्में पूरी कर हेलीकॉप्टर से दुल्हन की विदाई हुई

वैर, (निसं)। कुछ लोग अपनी शादी को यादगार बनाने के लिए अलग-अलग प्रकार के जतन करते हैं । ऐसा ही नजारा वैर थाना इलाके के गांव प्रेम नगर में देखने को मिला । जहां एक दूल्हा अपनी शादी को यादगार बनाने के लिए हेलीकॉप्टर से पहुंचा। वैवाहिक रस्में पूरी कर दुल्हन को हेलीकॉप्टर से लेकर वापिस अपने गांव के लिए रवाना हुआ।

गांव प्रेम नगर निवासी दिनेश चंद सैनी की पुत्री खुशबू का विवाह नादौती तहसील के गांव कैमरी निवासी विजेंद्र के साथ हुआ। जहां शनिवार को दूल्हा हेलीकॉप्टर से दुल्हन के गांव प्रेम नगर वैवाहिक कार्यक्रम संपन्न कराने के लिए पहुंचा। गांव प्रेमनगर के पास हेलीपैड बनाया गया जहां से दूल्हा दुल्हन के घर पहुंचा और वैवाहिक रस्में पूरी की गई। हेलीकॉप्टर से शाम को दुल्हन की विदाई हुई। हेलीकॉप्टर को देखने आस-पास ग्रामीणों की भारी तादाद में भीड़ पहुंची।

दूल्हा विजेंद्र का कहना था कि उसकी मां पांची देवी व उसके पिता राधेश्याम सैनी की इच्छा थी कि उसका बेटा अपनी दुल्हन को ससुराल से हेलीकॉप्टर से लेकर आए। जिसके लिए दिल्ली की एक निजी कंपनी का हेलीकॉप्टर किराए पर लिया। सुबह साढ़े 12 बजे हेलीकॉप्टर प्रेम नगर पहुंचा।

दूल्हा के आने से लेकर दुल्हन की विदाई तक हेलीकॉप्टर हैलीपेड पर ही खड़ा रहा । इस कार्यक्रम के लिए दिनेश चंद सैनी ने प्रशासन से अनुमति ली थी, जिसके चलते पुलिस, दमकल, एंबुलेंस सहित सुरक्षा व्यवस्था के लिए तैनात रही।

वैर के प्रेम नगर निवासी दिनेश सैनी की पुत्री की हैलीकॉप्टर में विदाई हुई।

राशिफल रविवार 20 फरवरी, 2022

पंडित अनिल शर्मा

फाल्गुन मास कृष्ण पक्ष, चतुरथी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2078, हस्त नक्षत्र सांय 4:42 तक, शूल योग दिन 3:07 तक, बव करण प्रात: 9:31 तक, चन्द्रमा रात्रि 4:31 पर तुला राशि में प्रवेश करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कुम्भ, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-धनु, बुध-मकर, गुरू-कुम्भ, शुक्र-धनु, शनि-मकर, राहु-वृष, केतु-वृश्चिक राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि और अमृत सिद्धि योग सूर्योदय से सांय 4:42 तक है। आज चतुरथी व्रत है। चन्द्रोदय जयपुर में रात्रि 9:56 पर होगा। आज से राष्ट्रीय फाल्गुन मास आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 8:28 से 9:52 तक, लाभ-अमृत 9:52 से 12:41 तक, शुभ 2:05 से 3:29 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 7:03, सूर्यास्त 6:18

मेष

स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। आवश्यक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी।

सिंह

आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। धन हानि हो सकती है। परिवार में आपसी सहयोग बना रहेगा और धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु

महत्वपूर्ण और अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

वृष

परिजनों का व्यवहार अच्छा नहीं रहेगा। मन खिन्न हो सकता है। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कन्या

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

मकर

आज धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। शुभ कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

मिथुन

परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है।

तुला

घर-गृहस्थी के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा।

कुंभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

कर्क

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। नये-पुराने मित्रों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

वृश्चिक

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन

परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। शुभ कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।